केशवदास का काव्य संसार,

केशवदास रीतिकाल धारा के आचार्य और कवि हैं, वे कठिन काव्य के प्रणेता हैं। अतः कुछ आलोचकों ने उन्हें कठिन काव्य का प्रेत भी कहा है। उनका जन्म संवत 1612 में हुआ था, और वे ओरछा नरेश के दरबारी कवि थे। उनके काव्य की रसिकता जग विदित है। काव्य कला की दृष्टि से अगर हम उन पर विचार करें तो उनका स्थान सूरदास और गोस्वामी तुलसीदास के बाद आता है। उनके संबंध में एक उक्ति प्रचलित है। –

"सूर-सूर तुलसी शशि उड़गन केशवदास
अबके कवि खद्योत सम जहँ तहँ करें प्रकाश।"

केशवदास के ग्रन्थों का परिचय चार वर्गों में दिया जा सकता है। –

(i) काव्य शास्त्र से सम्बद्ध ग्रन्थों के अन्तर्गत रसिक प्रिया, नखशिख, कवि प्रिया, छन्दमाला आदि की चर्चा की जा सकती है। आदि उल्लेखनीय हैं,

(ii) रामचन्द्रिका महाकाव्य राम के जीवन से जुड़ा हुआ है।

(iii) वीरगाथात्मक काव्यों के अन्तर्गत वीर-देव सिंह चरित, रतन बावनी, जहाँगीर यश चन्द्रिका की गणना की जाती है,

(iv) आध्यात्मिक विषयों का निरूपण विज्ञान गीता के अन्तर्गत किया गया है।

Scanned with Cam

लेकिन केशवदास मुख्यतः काव्य-शास्त्री है। इनकी ख्याति उनके काव्य शास्त्र सम्बन्धी ग्रंथों के कारण है। 'रामचन्द्रिका' की रचना भी भक्ति-भावना से अभिप्रेरित होकर नहीं की गई है. बल्कि इसकी रचना छंदों और अलंकारों के उदाहरण प्रस्तुत करने की दृष्टि से हुई है।

'रसिक-प्रिया' की रचना संवत 1648 में हुई थी। इस ग्रंथ में मुख्यतः श्रृंगार और गौण रूप में अन्य रसों का उल्लेख है। इसमें 16 प्रकाश हैं, प्रथम तेरह प्रकाश में श्रृंगार रस का निरूपण है, और 14वें प्रकाश में अन्य रसों की उपस्थिति है। पन्द्रहवें प्रकाश में वृत्तियों का वर्णन है और अंतिम प्रकाश में रस दोषों की चर्चा की गई है। श्रृंगार रस प्रकरण के अन्तर्गत नायक - नायिका भेद का भी वर्णन किया गया है।

'कवि-प्रिया' की रचना संवत 1658 में हुई। प्रस्तुत ग्रंथ में 16 प्रभाव है। इस ग्रंथ के प्रथम दो प्रभावों में वन्दना आश्रय दाता इन्द्रजीत सिंह तथा कविवंश का परिचय है। तीसरा प्रकरण दोष प्रकरण से सम्बद्ध है। चौथे प्रभाव में कवि शिक्षा प्रसंग है और अन्य प्रभावों में अलंकार निरूपण है। केशवदास के महत्वपूर्ण ग्रंथों में नख-शिख और अलंकार माला उल्लेख्य हैं। छन्द माला दो भागों में 26 मात्रिक छंदों का निरूपण किया गया है। 'रतन बावनी' 'जहाँगीर जस चन्द्रिका' और 'वीर चरित' प्रशस्ति काव्य है। प्रथम में मधुकर शाह के पुत्र रतनसेन के वीर चरित का

PAGE NO.:

वर्णन संवाद शैली में प्रस्तुत है। वीर-चरित ओरछा के राजा वीर सिंह बुन्देला का चरित वर्णित है। जहाँगीर जस चन्द्रिका केशव दास की अंतिम रचना है। यह ग्रंथ अब्दुर्रहीम खानखाना की प्रशंसा में लिखा गया है। 'विज्ञान गीता' की रचना केशव-दास ने प्रबोध चन्द्रोदय के आधार पर की थी।

'रामचन्द्रिका' में राम चरित का वर्णन है। यही कारण है कि केशवदास की गणना भी राम भक्ति धारा के कवियों के अन्तर्गत की जाती है। इसकी रचना संवत् 1658 में की गई। प्रस्तुत ग्रंथ 39 प्रकाशों में विभक्त है। इसकी रचना क्रम में कवि ने 'वाल्मीकि रामायण' 'प्रसन्न राघव' और 'हनुमन्नाटक' से प्रेरणा प्राप्त की है। उल्लेख्य है कि इस रचना की मूल भावना भक्ति से ओत-प्रोत नहीं है। या फिर कहना चाहिए कि यहाँ भक्ति की प्रधानता नहीं है। इस रचना के माध्यम से कवि ने अपना आचार्यत्व प्रदर्शन किया है। इस रचना का मुख्य उद्देश्य अलंकार लक्षण निर्देश है।

'रामचन्द्रिका' में कवि ने तुलसीदास की अपेक्षा अधिक स्वतंत्रता से काम किया है। उन्हें जहाँ कहीं भी किसी पात्र में दोष-दर्शन हुआ है, उसे उन्होंने गुण बनाकर दिखलाने की कोशिश नहीं की है, बल्कि स्पष्ट शब्दों में उन्होंने उस पर अपनी आपत्ति दर्ज की है। कवि के अनुसार, गोस्वामी तुलसीदास जी ने रावण जैसे बलशाली और तेजस्वी पात्र साथ भरपूर अन्याय किया है। उस प्रतापी, प्रतिष्ठित और महिमान्वित पात्र के

रूप में चित्रित न कर घृणा का पात्र बना दिया है। रावण ने अगर कोई दुष्कर्म किया है, तो यही कि राम के ईश्वरत्व के समक्ष वह कभी भी नतमस्तक नहीं हुआ और अपनी शत्रुता का दीप सदैव वैर भाव के साथ जलाये रखा। एक दूसरे सत्य की ओर भी कवि ने हमारा ध्यान आकृष्ट किया है। वह है. विभीषण का आचरण और व्यवहार। कवि की दृष्टि में विभीषण का आचरण परम निन्दनीय है। क्योंकि वह अपने भाई के शत्रु से मिल जाता है। यह कार्य नैतिक दृष्टि से अत्यंत ही घृणित है। लेकिन गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपनी रचना में उसे आस्तिन का साँप नहीं बतलाया है: बल्कि उसकी प्रस्तुति समर्पित भक्त के रूप में की गई है। हिन्दुस्तान के लिए जयचन्द ने जो काम किया, राजपुताने के लिए समर सिंह ने जो किया, वही काम विभीषण ने रावण के साथ किया। रामचन्द्र ने उसे राजगद्दी और मुकुट देकर राजद्रोह को बढ़ावा दिया है। स्मरण रहे कि संस्कृत के कवियों ने भी विभीषण के इस निंदनीय प्रसंग की आलोचना - प्रत्यालोचना नहीं की। या फिर कहना चाहिए कि वे भी इस महत्व-पूर्ण प्रसंग से अलग - अलग रहे, लेकिन केशवदास अपनी रचना रामचन्द्रिका में मुखर होते हैं और रामचन्द्र के बड़े बेटे लव से विभीषण को खूब खरी-खोटी सुनाते हैं - अत्याचारी, परिवार को कलंकित करने वाला अगर तुम्हे रावण का आचरण पसंद न था, तो जिस समय रावण रामचन्द्र जी की पत्नी को

DATE: / /
PAGE NO:

हर लाया था, उसी समय तू रावण को छोड़कर क्यों राम के पास नहीं चला गया। तुझे धिक्कार है। तू जहर क्यों नहीं पी लेता। जाकर चुल्लू भर पानी में डूब क्यों नहीं मरता।"

केशवदास आचार्य रूप में विशेष स्थान के अधिकारी हैं। कवि की दृष्टि से उनका स्थान गौण है। इन्होंने प्रबंध और मुक्तक दो प्रकार के काव्यों की रचना की। प्रबन्ध काव्यों में रामचन्द्रिका का महत्वपूर्ण स्थान है। वीरसिंह देव चरित जहाँगीर जस चन्द्रिका तथा रतन बावनी ये सभी प्रबंध काव्य हैं। मुक्तक काव्यों में 'रसिक प्रिया' कवि प्रिया, नख-शिख ये तीन ग्रंथ हैं। इनका प्रतिपाद्य श्रृंगार, छंद और अलंकार है। इनकी रचनाओं में हृदय पक्ष की अपेक्षा बुद्धि तत्व की प्रधानता है। इनकी भाषा ब्रज भाषा है। ये बुन्देल खण्ड के निवासी थे। फलतः इनकी भाषा बुन्देली से भी प्रभावित है। ये संस्कृत के आचार्य थे। अतः इनकी भाषा बुन्देली से भी प्रभावित है। ये संस्कृत के आचार्य थे। अतः इनकी रचनाओं में संस्कृत का प्रभाव स्पष्टतः परिलक्षित होता है। इन्होंने अपनी रचनाओं को अलंकृत करने का प्रयत्न किया है। स्पष्ट तौर पर यह कहा जा सकता है कि इनकी भाषा में स्वाभाविकता नहीं है, बल्कि कृत्रिमता है।

Scanned with Cam